अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त

(वेल्लाल उमामहेश्वर कृत विरोधवरूथिनी के विशेष सन्दर्भ में)

संस्कृत विषय में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध
की
संक्षिप्त रूपरेखा

निर्देशिका :–
प्रो0 (श्रीमती) उर्मिला आनन्द
कला संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष
(संस्कृत विभाग)

शोधार्थिनी
स्वाति शर्मा

अध्ययन का क्षेत्र : दर्शन
संस्कृत विभाग : कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा
2014

संक्षिप्त रूप रेखा

अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त

(वेल्लाल उमामहेश्वर कृत विरोधवरूथिनी के विशेष संदर्भ में)

शोध का विषय, महत्त्व और औचित्य :–

जन्माद्यस्य यतः

ब्रह्म सूत्र–1–1–2

श्रीमद् भागवत पुराण–1–1–1

इस जगत् की सृष्टि, स्थिति और लय जिस तत्त्व से होते हैं, जो सभी सद् रूप पदार्थों में अनुगत है तथा असत् पदार्थों से पृथक् है, जो जड़ न होकर चेतन है तथा सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हैं, वह क्या है ? इस जिज्ञासा के समाधान में मानव मस्तिष्क की चूड़ान्त शाखा भारतीय दर्शन ने निरन्तर चिंतन किया है। इस आध्यात्मिक तत्त्व चिंतन का आरम्भ वैदिक काल से ही हो गया था। वैदिक काल में कुशाग्र चेतना सम्पन्न ऋषियों ने प्रत्यक्ष भौतिक तत्त्वों–पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश में ही देवत्व का विधान किया है, और प्रत्येक भौतिक तत्त्व के तीन रूप माने हैं:–

आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक।

प्रकृति के आध्यात्मिक रूप की कल्पना करके ही उनमें सूर्य, चन्द्रमा, वरूण, अग्नि, पृथ्वी, वायु आदि को सर्वशक्ति सम्पन्न मानकर संहिताओं में उनकी स्तुति की गयी है। इन शक्तियों के नियामक या व्यवस्थापक के रूप में ऋत की कल्पना की है, यहीं से अद्वैतवाद का बीजारोपण होता है। इसी परम्परा में प्रजापति, हिरण्यगर्भ तथा नासदीय सूक्त एक परम तत्त्व अद्वैत की ओर निर्देश करते हैं। ये दार्शनिक विचार ब्राह्मण ग्रन्थों में विकास को प्राप्त हुए तथा उपनिषदों में चरम पर पहुँचे।

सभी भारतीय दार्शनिक विचारों की चरम परिणति वेदान्त दर्शन हैं, इसमें ज्ञान की पराकष्ठा है तथा सम्पूर्ण दार्शनिक चिन्तन का सार है। वेदान्त श्रौत दर्शन है, इसमें प्रस्थानत्रयी का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रस्थानत्रयी में उपनिषद् का प्रथम स्थान है। वेद ज्ञान की अद्‌भुद् धारा है, जिसमें वेद के अन्तिम भाग उपनिषदों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। उस परम तत्त्व के विषय में उपनिषदों को ही प्रथम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है। उपनिषद् वाक्यों में आत्म तत्त्व का विस्तार से वर्णन हुआ है। उपनिषद् आस्तिक षड् दर्शनों का तो मूलाधार हैं ही, साथ ही नास्तिक दर्शनों जैन तथा बौद्ध में भी उपनिषद् के आत्म तत्त्व का चिन्तन द्रष्टव्य है। उपनिषद् वैदिक ऋषियों के स्वतन्त्र चिन्तन का संग्रह है। उपनिषद् ही द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि मतों की जन्मभूमि है।

प्रस्थानत्रयी में द्वितीय स्थान ब्रह्मसूत्र तथा तृतीय स्थान गीता का है। गीता में भक्ति, ज्ञान कर्म और योग का विवेचन करते हुये ब्रह्म के सगुण तथा निर्गुण रूपों का निरूपण किया गया है।

वेदान्त में ब्रह्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तत्त्व–चिन्तन में जब अनेक मत प्रकट हो गये तो महर्षि बादरायण ने ''ब्रह्म जिज्ञासा'' उत्पन्न की तथा ब्रह्मसूत्र की रचना की, जिसमें चार अध्याय है। प्रत्येक अध्याय चार–चार पादों में विभक्त है। ब्रह्म सूत्र में तत्त्व चिन्तन को दार्शनिक, नैतिक एवं तार्किक शैली में उपस्थित किया गया है।

ब्रह्मसूत्र में ब्रह्म, जीव तथा जगत् के स्वरूप एवं इनके पारस्परिक सम्बन्धों की जो व्याख्या सूत्रों के रूप में की गयी है, उसी को आधार बनाकर वेदान्त दर्शन के विभिन्न सिद्धान्त एवं सिद्धान्तों पर आधारित सम्प्रदाय विकसित हुए हैं सभी ने अपने–अपने मतों के अनुरूप ब्रह्मसूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की है।

ब्रह्मसूत्र पर मुख्य दश भाष्य उपलब्ध होते हैं।

1. शंकराचार्य (788–820 ई0) शारीरक भाष्य (निर्विशेषाद्वैत)
2. भास्कर (1000 ई0) भास्कर भाष्य (भेदाभेद)
3. रामानुजाचार्य (1117–1137) श्री भाष्य (विशिष्टाद्वैत)
4. मध्वाचार्य (1238) पूर्ण प्रज्ञ भाष्य (द्वैत)
5. निम्बार्काचार्य (1250) वेदान्त पारिजात (द्वैताद्वैत)
6. श्रीकण्ठ (1270) शैव भाष्य (शैव विशिष्टाद्वैत)
7. श्रीपति (1400) श्रीकर भाष्य (वीर शैव विशिष्टाद्वैत)
8. वल्लभाचार्य (1479–1544) अणु भाष्य (शुद्धाद्वैत)

9. विज्ञान भिक्षु (1600) विज्ञानामृत (अविभागाद्वैत)

10. बलदेव (1725) गोविन्द भाष्य (अनित्यभेदाभेद)

इन भाष्यों में शंकर, भास्कर तथा विज्ञान भिक्षु निर्गुण ब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं, तथा शेष सात भाष्यों में सगुण ब्रह्म का निरूपण किया गया है। इन सात भाष्यों में भी रामानुज, निम्बार्क, मध्व, वल्लभ एवं बलदेव के भाष्य वैष्णव सम्मत है, इनका वैष्णव सम्प्रदाय है। श्रीकण्ठ और श्रीपति के भाष्य शैव सम्प्रदाय से समबद्ध हैं।

इस प्रकार ब्रह्मसूत्र पर प्रथम भाष्य आठवीं शताब्दी में श्री भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा प्रणीत है इसमें निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन है।

इन्होंने ब्रह्म को शुद्ध, नित्य, सर्वज्ञ, मुक्त, सत्यस्वरूप, प्रत्यक् चैतन्य कहा है। इन्होने जगत् का कारण माया, अविद्या या अज्ञान को स्वीकार किया है। इनका मत अद्वैत वेदान्त को सुस्थापित करता है।

ब्रह्मसूत्र पर प्रमुख वैष्णव भाष्य श्री भाष्य है, जो शांकर भाष्य के लगभग 200 वर्ष उपरान्त 1117–1137 ई0 के मध्य लिखा गया। इसमें शंकर मत का खण्डन करते हुए मिथ्या जगत् को सत् सिद्ध किया गया है। ब्रह्म से उत्पन्न चिद्–अचिद् वस्तु को ब्रह्म का शरीर बताया गया है। इनका मत विशिष्टाद्वैत है, इसका अर्थ है विशिष्टयोः अद्वैतम्। सूक्ष्म चिदचिद् ब्रह्म कारण ब्रह्म है। स्थूल चिदचिद् ब्रह्म कार्य ब्रह्म है।

रामानुज का ईश्वर, आत्मा, संसार और मुक्ति के विषय में भगवद् पाद शंकराचार्य से पर्याप्त मतभेद है। रामनुज ने श्री भाष्य में शांकर मत का विरोध किया है तथा शंकराचार्य के ज्ञानवाद की निन्दा करते हुये उन्हें वेदवादच्छद्म प्रच्छन्न बौद्ध कहा है।

''वेदवादच्छद्मप्रच्छन्न बौद्ध निराकरणे निपुणं प्रपञ्चितम्''

श्री भाष्य 2–2–27

अतः दोनो आचार्यों ने ब्रह्म सूत्र की व्याख्या भिन्न प्रकार से की है। प्रस्तुत अध्ययन दोनों आचार्यों के मतों के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में ''**वेल्लाल उमामहेश्वर कृत विरोध वरूथिनी**'' के विशेष संदर्भ में प्रस्तुत होगा।

"विरोधवरूथिनी" वेल्लाल उमामहेश्वर कृत वादानुवादक या शास्त्रार्थपरक रचना है। यह ग्रन्थ विशिष्टाद्वैत के प्रर्वतक आचार्य रामानुज द्वारा श्री भाष्य में भगवत्पाद शंकराचार्य के अद्वैतमत पर विरोध एवं खण्डन करने का तार्किक, समालोचनात्मक, तर्क–वितर्क पूर्ण, तुलनात्मक परीक्षण करता है तथा रामानुज का खण्डन करते हुए शंकराचार्य के अद्वैतमत को सूत्र–प्रस्थान के आधार पर न्याय प्रदान करता है।

आचार्य वेल्लाल ने शंकराचार्य तथा रामानुज के मतों में 27 विरोधों का उद्घाटन किया है तथा इन्ही विरोधों के द्वारा रामानुज मत के अनेक दोषों का निरूपण करते हुए अद्वैत वेदान्त के भामती प्रस्थान को आधार बनाकर शांकर मत की स्थापना की है।

रामानुज ने जिन तत्त्वों ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, संसार और मुक्ति के विषय में शंकराचार्य का विरोध किया है, उन्ही तत्त्वों को आधार बना कर आचार्य वेल्लाल उमामहेश्वर ने रामानुज के सिद्धान्तों का खण्डन किया है तथा शंकराचार्य को प्रच्छन्न बौद्ध सिद्ध करने वाले रामानुज को प्रच्छन्न जैन सिद्ध किया है।

इन्होने विशिष्टाद्वैत को जैन दर्शन के अनेकान्तवाद तथा स्याद्वाद पर आधारित बताया है। जैन मत में आत्मा का परिमाण देह के अनुसार मानकर संकोच तथा विकास की कल्पना की गयी है, उसी प्रकार विशिष्टाद्वैत में ब्रह्म को चिदचिद् विशिष्ट बताकर चिद् को विकार माना है।

"चिदंशस्य च कर्मफलभोक्तृत्वायतदनुरूपज्ञानविकासस्वरूपविकारोभवति।"

श्री भाष्य P.524

आचार्यों ने ब्रह्मसूत्र पर अपने सिद्धान्तों के अनुरुप भाष्य लिखकर ब्रह्मसूत्र के मन्तव्य को समान रूप से प्रकट न करके अपने अनुरुप किया है। यह स्वरूप प्रकटीकरण परस्पर भिन्न ही नहीं, अपितु विरूद्ध भी है। इसलिए यह सतत जिज्ञासा का विषय रहा है कि ब्रह्म सूत्र का वास्तविक मन्तव्य क्या है ? ब्रह्मसूत्र पर कौन सा भाष्य उसको सूत्रानुकूल रूप में प्रस्तुत कर सका है ?

इस दिशा में उपलब्ध शोधपत्रों के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि ब्रह्म सूत्र के मन्तव्य को सम्यग् रूप से समझने के लिए सराहनीय प्रयत्न होते रहे हैं। उक्त प्रयासों की दिशा में यह भी एक प्रयास है, जो प्रस्तुत अध्ययन के रूप में उपस्थित हैं।

भारतीय दर्शन के तीन प्रमुख वादों अद्वैत, विशिष्टाद्वैत तथा द्वैत पर अनन्तालवार, ब्रह्मानन्द, वनमालीमिश्र, त्रयम्बक भट्ट, अप्पय दीक्षित आदि ने एक दूसरे के तर्कों व सिद्धान्तों के खण्डनपरक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखे हैं। इसी परम्परा में वेल्लाल उमा महेश्वर ने वादानुवादक तथा आलेचनात्मक ग्रन्थ विरोधवरूथिनी लिखा है। आचार्य का यह ग्रन्थ अत्यन्त तार्किक तथा शास्त्रपरक शैली में है। इसमें रामानुज के विशिष्टाद्वैत मत का खण्डन तथा शंकराचार्य के अद्वैत मत का मण्डन किया गया है। कामकोटिपीठम् के जगद्गुरू श्री शंकराचार्य ने (अक्टू0 1932 मद्रास) अपने सम्बोधन में कहा था कि आलोचनात्मक खण्डनमण्डन परक दार्शनिक ग्रन्थों के माध्यम से सिद्धान्त अधिक स्पष्टता को प्राप्त होते हैं। इससे प्रेरित होकर ही श्री वी0वेंकटरमन रेड्डी, संस्कृत प्रवक्ता, तिरुपति ने गवर्न्मेण्ट ओरियण्टल मेन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी **(GOML)** अड्यार लाइब्रेरी तथा ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, श्री वेंकटेश्वर यूनीवर्सिटी इन तीनों स्थानों पर संरक्षित हस्तलेखों को आधार बनाकर सन् 1986 में विरोधवरुथिनी को सम्पादित कर प्रकाशित किया।

प्रस्तुत अध्ययन तुलनात्मक, गवेषणात्मक तथा वादानुवादपरक होगा। यहाँ कतिपय ब्रह्म सूत्रों के सम्बन्ध में शंकराचार्य और रामानुचार्य द्वारा प्रस्तुत व्याख्याओं की सूत्रानुकूलता पर विचार होगा।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि इस विषय पर अभी कोई शोध कार्य नहीं हुआ है अतः मैंने ''अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त'' (वेल्लाल उमामहेश्वर कृत विरोधवरुथिनी के विशेष सन्दर्भ में) विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया है। प्रस्तुत शोध विषय को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है तथा अन्त में संदर्भ ग्रन्थ सूची संलग्न है।

शोधार्थिनी

स्वाति शर्मा

शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूप रेखा

भूमिका

प्रथम अध्याय–

1. अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त : स्वरूप परिचय

1.1 अद्वैत वेदान्त का सामान्य परिचय

1.1.1 अद्वैत वेदान्त के प्रस्थानद्वय

(i) भामती प्रस्थान

(ii) विवरण प्रस्थान

1.1.2 अद्वैत वेदान्त की तत्त्व मीमांसा

1.2 विशिष्टाद्वैत वेदान्त का सामान्य परिचय

1.2.1 विशिष्टाद्वैत वेदान्त की तत्त्व मीमांसा

द्वितीय अध्याय–

2 उमामहेश्वर एवं विरोधवरूथिनी : सामान्य परिचय

2.1 वेल्लाल उमामहेश्वर एवं उनका साहित्यिक परिचय

2.2 विरोधवरूथिनी का सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय–

3 विरोधवरूथिनी में मीमांस्य ब्रह्मसूत्र एवं तत् प्रतिपादक श्रुतियाँ

3.1 मीमांसा सूत्रो का प्रतिपाद्य विषय

3.2 प्रतिपाद्य विषयों के समर्थन में प्रस्तुत श्रुतियाँ

चतुर्थ अध्याय–

4 वरोधवरूथिनी के विरोध गर्भक सिद्धान्त

4.1 ब्रह्मकारणवाद

4.2 जीव का परिमाण और प्रकार

4.2.1 ज्ञान संकोच विकास वाद

4.2.2 जीव और ब्रह्म

4.2.3 कर्तृत्व और भोक्तृत्व

4.2.4 जीव का विभुत्व और अणुत्व

4.3 जगत् : यथार्थवाद

पंचम अध्याय–

5 वेल्लाल उमामहेश्वर का वेदान्त दर्शन को योगदान

5.1 विशिष्टाद्वैत सम्मत ब्रह्मसूत्र व्याख्याओं में विरोध

5.2 विशिष्टाद्वैत सम्मत विरोध मुक्त अद्वैत सिद्धान्त

उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

कोश ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

संस्कृत ग्रन्थ–

1. **आत्मबोध**–शंकराचार्य, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई 1988
2. **इष्टसिद्धिः**–विमुक्तात्मा, सं0–एम0 हिरियन्ना गायकवाड़, ओरियण्टल सी0 बड़ौदा 1933
3. **ईशकेन आदि उपनिषद् भाष्य**–गीताप्रेस, गोरखपुर
4. **ईशादि दशोपनिषदः**–मोतीलाल बनारसीदास, प्रथम संस्करण दिल्ली 1964
5. **उपनिषद् संग्रहः**–पं0 जगदीश शास्त्री, मोतीलाल, बनारसीदास 1970
6. **गीता भाष्य**–रामनुजाचार्य
7. **तत्त्व टीका (श्री भाष्य टीका)**–वेंकटनाथ (वेदान्त देशिक), चौखम्बा, प्रतिष्ठान वाराणसी।
8. **नैष्कर्म्य सिद्धि**–सुरेश्वराचार्य, ज्ञानोन्तमकृत चन्द्रिका सहित सं0 एम0 हरियन्ना बम्बई 1925
9. **पञ्चपादिका (शरीरक भाष्य वृत्ति, अपूर्ण)**–पद्मपादाचार्य, सं0 रामशास्त्री, विजयनगरम् सीरिज, बनारस।
10. **पञ्चपादिका विवरण**–प्रकाशात्मयाति सं0–श्री रामशास्त्री विजगनगरम सीरिज, बनारस मद्रास, ओरियण्टल सीरिज भाग–2 मद्रास।
11. **ब्रह्मसिद्धि**–मण्डनमिश्र, शंखपाणि कृत टीका सहित सं0–एस0 कुप्पास्वामि शास्त्री ओरियण्टल मैन्यूस्क्रिप्टस, सी0नं0 4 मद्रास 1937
12. **ब्रह्मसूत्र (शांकरभाष्य)**–स्वामि सत्यानन्द सरस्वती, गोविन्दमठ, टेढ़ीनीम सं0 2028 वाराणसी
13. **ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य (रत्नप्रभा सहित)**–सं0 भोलेबाबा, हिन्दी अनुवाद सहित, 3 भाग, गोपीनाथ कविराज की व्याख्या सहित।
14. **भगवत् गीता (शांकर भाष्य)**–गीता प्रेस, गोरखपुर
15. **भगवत् गीता**–सं0–डा0 राधाकृष्णन, सरस्वती विहार, जी0टी0रोड, शहादरा दिल्ली 8वाँ सं0, 1982
16. **भागवत दर्शनम्**–डा0 रसिक बिहारी जोशी, चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली
17. **भामती (चतुःसूत्री)**–सं0–सूर्यनारायण शास्त्री तथा कुन्हनराजा, अड्यार, मद्रास 1933
18. **भामती (शारीरक भाष्य व्याख्या)** –सं0–अनन्त कृष्ण शास्त्री, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1938

19. **माण्डूक्य कारिका (शांकरभाष्य एवं आनन्द गिरि टीका)**–गीता प्रेस गोरखपुर, 19 वाँ संस्करण सम्वत् 2062

20. **माण्डूक्योपनिषद् (गोडपादकारिका शांकर भाष्य सहित)**–गीता प्रेस गोरखपुर, 19 वाँ संस्करण सम्वत् 2062

21. **वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)**–व्याख्याकार–हरिकृष्णदास गोयन्दका, सं0 2068

22. **वेदान्त परिभाषा**–डा0–गजानन शास्त्री मुसलगांवकर चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी

23. **वेदान्तसार**– प्रो0राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स तृ0सं0 1989

24. **वेदान्त सार**–सदानन्द व्याख्याकार डा0 बीना गुप्ता संजय पब्लीकेशन्स, आगरा।

25. **शांकर भाष्य और आनन्द गिरि टीका सहित प्रकाश उपनिषद्**–वाणी विलास, संस्कृत पुस्तकाल वाराणसी

26. **श्री भाष्य (ब्रह्म सूत्र भाष्य)**– रामानुजाचार्य, हिन्दी टीकाकार श्री ललित कृष्ण गोस्वामी चौ0सं0, प्रतिष्ठान दिल्ली 2010

27. **श्रीमद् भागवत महापुराण**–गीताप्रेस, सम्वत् 2061

28. **श्रुत प्रकाशिका (श्री भाष्य टीका)**–सुदर्शन सूरि, निर्णय सागर, प्रेस, बम्बई

29. **श्वेताश्वरोपनिषद्**–गीताप्रेस, गोरखपुर सम्वत् 2055

30. **सर्वदर्शन संग्रह**–डा0 उमाशंकर (ऋषि)–चौखम्बा, वाराणसी 2001

31. **सर्ववेदांत सिद्धान्त**–शंकराचार्य, श्री रामकृष्ण–अद्वैताश्रम, एर्नाकुलम 1960

सहायक ग्रंथ सूचीः–

हिन्दी ग्रन्थ–

1. **अद्वैत वेदान्त इतिहास तथा सिद्धान्त**–डा0 राममूर्ति शर्मा ईस्टर्न बुक लिंकर्स, तृतीय संस्करण 1998
2. **बोद्ध दर्शन मीमांसा**–आचार्य बलदेव उपाध्याय
3. **भारतीय दर्शन**–आ0बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी 1976
4. **भारतीय दर्शन**–उमेश मिश्र
5. **भारतीय दर्शन**–डा0 पारसनाथ द्विवेदी, श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशक, आगरा–3
6. **भारतीय दर्शन**–डा0 राधाकृष्णन, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट दिल्ली सं0–1998
7. **भारतीय दर्शन**–डा0 बलदेव उपाध्याय, शारदा मन्दिर वाराणसी 1997, मुद्रण–2001

8. **भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन**–चन्द्रधर शर्मा, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली 1990
9. **भारतीय दर्शन का इतिहास**–डा0 एस0एन0दास गुप्ता राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर–4, 1978
10. **भारतीय दर्शन का इतिहास**–आ0 जयदेव वेदालंकार न्यू भारती बुक, कार्पोरेशन दिल्ली।
11. **भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा**–राममूर्ति शर्मा, मणिद्वीप दिल्ली–2001
12. **भारतीय दर्शन की रूपरेखा**–एम0 हिरियन्ना
13. **भारतीय दर्शन की रूपरेखा**–प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
14. **वैदिक साहित्य का इतिहास**–डा0 पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 1987
15. **वैदिक साहित्य की रूपरेखा**–डा0 रसिक बिहारी जोशी, साहित्य निकेतन, कानपुर 1975
16. **सर्वदर्शन संग्रह**–सं0–जी0वी0कावेल, ए0ई0 ग्राफ कासमो पब्लिकेशन्स, इण्डिया, 1976

अंग्रेजी ग्रंथ सूचीः–

अंग्रेजी ग्रन्थ –

1. **Advait Vedant- R.Balsubrahmaynan, University of Madras 1976**
2. **A History of Indian Philosophy-J.N.Sinha, Calcutta 1973**
3. **A History of Indian Philosophy-S.N. Das. Gupta, Moti lal, Banersidas, Delhi.**
4. **Aspects of Indian Philosophy-Dr. M.M. Agrawal S.P.H. New Delhi, 1986.**
5. **Indian Philosophy-Radha Krishan, Rajpal and sons, Delhi 1969.**
6. **Indian Philosophy-D.P. Chattopadhyaya, New Delhi 1964**
7. **Jiwatman in Brahmsutras -Abhay Kumar Guha, Calcutta 1821**
8. **The Vedant (A Study of Brahmasutras with the Bhasya of Ramanuja Nimbraka, Madhva and Vallabha) V.S. Ghate.**

कोष ग्रन्थ :–

1- धर्मषास्त्र का इतिहास–राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान

2- **वाचस्पत्यम्**–श्री तारानाथ, तर्क वाचस्पति भट्टाचार्य राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली–2002

3- **शब्द कल्पद्रुम**–राजा राधाकान्त देव, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 2002

4- **हिन्दू धर्म कोश**–राजवलीय पाण्डेय, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान

5- **A Classical Dictionary of Hindu Mythology, Religion, Geography, History and Literature**- John Dowson, M.R.A.S Munishilal Manoharlal, Publishers, New Delhi.

6- **Encyclopedia of Indian Philosohies-** karl. H.Potter Vol.III, Advait Vedant

7- **Encyclopedia of Philosophy of Indian Religion-** Sadhu Shantinath in 2 vol. cosmo, Publications, New Delhi 2001

8- **Encyclopedia of Vedanta-** Ram Murti Sharma, Eastern Book, Linkers Ist Edition-1993